Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

निरालाजीः जीवनी एवं रचना-कर्म

डॉ. कल्पेश बी. पटेल
(एम.ए., एम.एड्., एम.फील., पीएच.डी.) डीस्ट्रीक इन्स्टीन्ट्यूट ऑफ एज्युकेशन एवं ट्रेनिंग, भरूच में सन् 2010 से सी. लेक्चरर के रूप में कार्यरत है।

संक्षेपः (Abstract)

निराला जी एक कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार और कहानीकार थे। उन्होंने कई रेखाचित्र भी बनाये। उनका व्यक्तित्व अतिशय विद्रोही और समाजवादी था। निराला जी की ख्याति एक छायावादी किव के रूप में बनती है। साहित्य रचना में इनका पदार्पण इनकी रचना “जन्मभूमि की वंदना” से आरंभ होती है ये निरंतर “मर्यादा” और “सरस्वती” पत्रिका का अध्ययन करते थे, इनकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना “जूही की कली” रही, छायावादी कवियों में इनका अनोखा स्थान है।

कवि अपने समय की पग-ध्वनि के स्थान अपनी कविता के तार को जोडता है। कभी-कभी समय के थपेरे से आहत होकर वह विद्रोही भी बन जाता है तो कभी-कभी सृजन की आग उसके चिन्तन को प्रकाशित करती है। युग की पीडा और समय का दंश निराला के हृदय को भी सालता रहा और उनके भीतर से शब्द का लावा फूटता रहा।

चावीरूप शब्दः निराला, उपन्यासकार, कवि, जीवन, भावना।

उनके शब्द कही अंगार बनकर निकले तो कहीं इन्द्रधनुष बनकर उतरे।

इस महान कवि की जीवन-यात्रा भी फूल और अंगारे के बीच से होकर चलती रही। एक सतत संघर्ष की कहानी उनके जीवन की निशानी बनकर रह गई।

जीवन परिचयः-

सूर्यकान्त त्रिपाठी “निराला” का जन्म बंगाल की मिहषादल रियासत (जिला-मेदिनीपुर) में 29 फरवरी, सन 1599 को हुआ था। वसंत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा 1930 में प्रारंभ हुई। उनका जन्म मंगलवार को हुआ था। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाडा) के रहने वाले थे और मिहषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप के उत्तर प्रदेश के गढकोला नामक गाँव के निवासी थे।

शिक्षाः-

निराला की शिक्षा यही बंगाली माध्यम से शुरु हुई। हाईस्कूल पास करने के पश्चात उन्होंने घर पर ही संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। हाईस्कूल करने के पश्चात वे लखनऊ और उसके बाद गढकोला (उन्नाव) आ गये। प्रारंभ से ही रामचरितमानस उन्हें बहुत प्रिय था। वे हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में निपुण थे और श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकान्द और श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर से विशेष रूप से प्रभावित थे। मैट्रीकुलेशन कक्षा में पहुँचते-पहुँचते इनकी दार्शनिक रूचि का परिचय मिलने लगा। निराला स्वच्छन्द प्रकृति के थे और स्कूल में पढने से अधिक उनकी रूचि घूमने, खेलने, तैरने और कुश्ती लडने इत्यादि में थी। संगीत में उनकी विशेष रूचि थी। अध्ययन में उनका विशेष मन नहीं था। इस कारण उनके पिता कभी-कभी उनसे कठोर व्यवहार करते थे।

विवाहः-

पंद्रह वर्ष की अल्पआयु में निराला का विवाह मनोहरा देवी से हो गया। राय बरेली जिले में डलमऊ के पंडीत रामदयाल की पुत्री मनोहरा देवी सुन्दर और शिक्षित थी, उनको संगीत का अभ्यास भी था। पत्नी के ज़ोर दने पर ही उन्होंने बंगला के बजाय हिन्दी में कविता लिखना शुरु कर दिया। बचपन के नैराश्य और एकाकी जीवन के पश्र्चात उन्होंने कुछ वर्ष अपनी पत्नी के साथ सुख में बिताये, किन्तु यह सुख ज्यादा दिनों तक नहीं टिका और उनकी पत्नी की मृत्यु 20 वर्ष की आयु में ही हो गयी। बाद में उनकी पुत्री जो कि विधवा थी, की भी मृत्यु हो गयी। वे आर्थिक विषमताओं से घिरे रहे। एसे समय में उन्होंने विभिन्न प्रकाशकों के साथ प्रूफरीडर के रूप में काम किया, उन्होंने “समन्वय” का भी सम्पादन किया।

पारिवारिक विपत्तियाः-

16-17 वर्ष की आयु में ही इनके जीवन में विपत्तियाँ आरंभ हो गयी, पर अनेक सामाजिक और साहित्यिक संघर्षों को झेलते हुए भी इन्होंने कभी अपने लक्ष्य को नीचा नहीं किया। इनकी मॉं पहले ही गत हो चुकी थी, पिता का भी असामायिक निधन हो गया। प्लेग के विकराल प्रकोप में घर के अन्य सदस्य भी चल बसे। पत्नी की मृत्यु से तो ये टूट गये।

पिता की छोटी-सी नौकरी की असुविधाओं और मान-अपमान का परिचय निराला को आरंभ में ही प्राप्त हुआ। तीन वर्ष की आयु में माता का और बीस वर्ष की आयु में पिता का देहांत हो गया। अपने बच्चों के अलावा संयुक्त परिवार का बोझ भी निराला पर आ पडा। शेष कुनबे का बोझ उठाने में महिषादल की नौकरी अपर्याप्त थी। इसके बाद उनका सारा जीवन आर्थिक संघर्ष में बीता। जीवन का उत्तरार्ध इलाहाबाद में बीता। 5 अक्टूबर 1961 को अलाहाबाद में निराला की मृत्यु हो गयी।

कार्यक्षेत्रः-

निरालाने महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पन्त और जयशंकर प्रसाद के साथ मिलकर छायावाद अभियान का बीडा उठाया था। निराला के परिमल और अनामिका को वास्तविक छायावाद हिन्दी साहित्य का नाम दिया है। अपने जीवन काल में उन्हें ज्यादा पहचान नहीं मिली थी। उनकी कविताओं का प्रकार उस समय काफि क्रांतिकारी था, लेकिन उनके स्वभाव के चलते उनकी ज्यादातर कविताएं प्रकाशित नहीं हो पाई। अपने छंदो से उन्होंने सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाज भी उठाई थी। अपने कार्यो में उन्होंने वेदांत, राष्ट्रियता, रहस्यवाद, और प्रकृति के प्यार का खासा मिश्रण किया है।

उनकी रचनाओं का विषय हमेशा से ही ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृतिक, सामिजक और राजनीतिक रहा है। उन्होंने ही अपनी कविताओं में सौन्दर्य दृश्य, प्राकृतिक प्रेम और आजादी जैसी चीजों को शामिल किया है। इसके बाद छायावादी युग में उन्होंने कविताओं के नए रूप को उजागर किया। “सरोज स्मृति” नाम की उनकी कविता काफि प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होंने अपनी बेटी के प्रति उनके प्यार और भावनाओं का वर्णन बडी खूबसूरती से किया है।

आधुनिक हिन्दी गध्यों में मुक्त छंदो के उपयोग करने का श्रेय भी निराला को ही जाता है। निराला की बहुत-सी कविताओं को बाद में बहुत से विध्वानों ने संपादित भी किया है। संपातरित की गयी कविताओं में दी रिटर्न ओफ सरस्वतीः चार हिन्दी कविताएँ, प्यार और युद्ध छायावाद संकलन शामिल है। स्वर्गीय बालकवि आर्य ने निराला के रूप वैविध्य का चित्रण करते हुए लिखा था-

काव्य गगन का सूर्य निराला,
छन्दों का था तूर्य निराला
झंकृत-स्वर का गान निराला,
नाद-शक्ति की तान निराला,
महाकाल का काल निराला
तमक गया, विकराल निराला,
शान्त हुआ तो मोम निराला,
ठंडाया हरिओम, निराला।
हिन्दी का सिरमौर निराला,
स्वाभिमान में और निराला
भावों की वह घटा निराला,
अनुप्रासों की छटा निराला।

निराला की प्रमुख रचनाएँ -

अप्सरा	(1931)
अलका	(1933)
निरूपमा	(1936)
कुल्लीभाट	(1939)
चतुरी चमार	(1941)
बिल्लेसुर बकरिहा	(1941)
लिली	(1933)
सखी	(1935)
देवी	(1945)

निराला ने कहानियों में विविध उदेश्यों की व्यंजना की है। सामाजिक कहानियों में उनका मूल लक्ष्य नारी वर्ग की समस्याओं का चित्रण करना है, जबकि संस्मरणात्मक कहानियों की रचना अपने संपर्क में आनेवाले विशिष्ट व्यक्तियों के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत करने के लिए की गई है। दार्शनिक कहानियों की सर्जना में उनका मुख्य प्रयोजन इश्वर और विश्व के अभिन्न संबंध का उदघाटन करना रहा है।

उपसंहारः

इस प्रकार “निराला” का जीवन सचमुच निराला ही था। निराला के व्यक्तित्व को हम किसी एक रूप का नाम नहीं दे शक्ते, क्योंकि वह बहुत सारी प्रतिभाओं के धनी थे। निराला जैसे युग कवि को किसी ने महापाण निराला कहा तो किसी ने उसे मतवाला कहा। किसीने उसे छायावादी युग का कबीर कहा तो किसीने उन्हें मस्तमौला कहा। किसीने उन्हें सांस्कृतिक नवजागरण का बैतालिक कहा तो किसीने उन्हें सामाजिक क्रान्ति का विद्रोही कवि कहा। इस प्रकार उनके नाम के साथ वैचित्रम जुटता गया। मगर “निराला” वास्तव में निराला ही बने रहे।

निराला के जीवन का मूल-मंत्र तथा उनकी गति कविता की और थी। अपने अंतःकरण की जो भावनाएँ वह कविता में प्रकट न कर सके, उसके लिए उन्होंने कहानी के क्षेत्र में पदार्पण किया। यदि महाकवि निराला की प्रतिभा ने कहानी-क्षेत्र को विशेष रूप से

अपनाया होता तो वे भारत के श्रेष्ठ कहानिकारों की पंगत में बैठ सकते। निराला ने कहानी के रूप में जो दिया है इसमें भी वे निराला है और न दे सके, उसमें भी।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः

1. निराला स्मृतिग्रंथ, औकार शरद।
2. निराला की साहित्य साधना (प्रथम भाग) डॉ. रामविलास शर्मा।
3. महाकवि निरालाः संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ, राचकुमार शर्मा।
4. महाप्राण निराला, गंगाप्रसाद पाण्डेय।
5. निराला का गध्य-साहित्य, डॉ. निर्मल जिन्दल।
6. अपनी खबर, पाण्डेय बेचन शर्मा।